जटासिंहनन्दी

जीवन-परिचय : पुराण-काव्य-निर्माता के रूप में जटाचार्य या जटासिंहनन्दी का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है। जिनसेन, उद्योतनसूरि आदि प्राचीन आचार्यों ने जटासिंहनन्दि की प्रशंसा की है। ये जैन संस्कृत-प्रबन्ध-काव्य के आद्य अर्थात् प्रथम रचयिता है। जिस प्रकार आचार्य समन्तभद्र संस्कृत के प्रथम स्तुतिकार हैं, उसी प्रकार जटासिंहनन्दी प्रथम प्रबन्ध-संस्कृत-काव्य-रचयिता हैं।

आचार्य जिनसेन प्रथम के 'हरिवंशपुराण' एवं 'जिनसेन द्वितीय' के आदिपुराण के उल्लेखों के अतिरिक्त उत्तरवर्ती अनेक आचार्यों ने एवं उनके ग्रन्थों में जटासिंहनन्दी की एवं इनके द्वारा रचित वरांगचरित की प्रशंसा की है। अतएव जटासिंहनन्दी का समय 7वीं शताब्दी का उत्तरार्ध एवं 8वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।

रचना-परिचय : जटासिंहनन्दि की एक ही रचना उपलब्ध है।

1. वरांगचरित : यह एक पौराणिक महाकाव्य है। इसमें पुराणतत्त्व और काव्यतत्त्व का मिश्रण है। इसकी कथावस्तु में नायक 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ तथा श्रीकृष्ण के समकालीन 'वरांग' नामक पुण्यपुरुष की कथा का वर्णन किया है। इस पौराणिक महाकाव्य में नगर, ऋतु, उत्सव, क्रीडा, रति, विवाह, जन्म, राज्याभिषेक, युद्ध और विजय आदि का वर्णन महाकाव्य के समान ही है। इसमें 31 सर्ग और 1805 श्लोक हैं। इस महाकाव्य के नायक वरांग में धर्मनिष्ठा, सदाचार, कर्तव्यपरायणता, सहिष्णुता, विवेक, साहस, लौकिक और आध्यात्मिक शत्रुओं पर विजयप्राप्ति आदि अनेक नायक के गुण पाये गये हैं।

'वरांगचरित' के रचयिता ने इसे धर्मकथा कहा है, पर वास्तव में यह एक पौराणिक-महाकाव्य है। इस धर्मकथा-महाकाव्य में जिनमन्दिर और जिनबिम्ब निर्माण, प्रतिमा-स्थापना, पूजा, पूजा का फल और दानादि का वर्णन किया है।